



मध्य प्रदेश में जैविक कृषि की वर्तमान स्थिति का अध्ययन

श्रीमती विजयश्री मालवीय¹

OPEN ACCESS

Volume: 4

Issue: 1

Month: February

Year: 2025

ISSN: 2583-7117

Published: 27.02.2025

Citation:

श्रीमती विजयश्री मालवीय, मध्य प्रदेश में जैविक कृषि की वर्तमान स्थिति का अध्ययन.” International Journal of Innovations In Science Engineering And Management, vol. 4, no. 1, 2025, pp. 204–219.

DOI:

10.69968/ijsem.2025v4i1204-219



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

‘सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य), शासकीय कुसुम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिवनी मालवा जिला नर्मदापुरम

सारांश

यह अध्ययन मध्य प्रदेश में जैविक कृषि की वर्तमान स्थिति की जांच करता है और इसके अपनाने को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करता है। अनुसंधान सरकारी नीतियों के प्रभाव, जैविक कृषि के बारे में ज्ञान के स्तर, बाजार पहुंच और किसानों को जैविक कृषि प्रथाओं को बदलने और बनाए रखने में आने वाली चुनौतियों को समझने पर केंद्रित है। अध्ययन में किसानों, सरकारी अधिकारियों और बाजार हितधारकों सहित 425 उत्तरदाताओं से डेटा एकत्र करने के लिए एक संरचित सर्वेक्षण पद्धति को नियोजित किया गया है, जिसमें किसानों के लिए एक स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना तकनीक और सरकारी अधिकारियों और बाजार सहभागियों के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण का उपयोग किया गया है। अध्ययन तीन परिकल्पनाओं का परीक्षण करता है: (1) जैविक कृषि को अपनाने पर सरकारी नीतियों का प्रभाव, (2) जैविक कृषि और फसल की ‘उपज के बारे में ज्ञान’ के बीच संबंध, और (3) जैविक कृषि की लाभप्रदता पर बाजार पहुंच का प्रभाव।

विश्लेषण से पता चलता है कि सरकारी नीतियां जैविक कृषि को अपनाने की दर को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं, अनुकूल नीतियों और वित्तीय प्रोत्साहनों के साथ किसानों को जैविक प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। जैविक कृषि और फसल उपज के बारे में ज्ञान के स्तर के बीच एक मजबूत सकारात्मक सहसंबंध पाया गया, यह सुझाव देते हुए कि कृषि के परिणामों में सुधार के लिए शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम महत्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त, बाजार पहुंच जैविक कृषि की लाभप्रदता निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, बाजारों तक बेहतर पहुंच के साथ किसानों के लिए उच्च वित्तीय लाभ होता है। अध्ययन में किसानों को जैविक कृषि में आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें जैविक कृषि को अपनाने की लागत और पर्याप्त बुनियादी ढांचे की कमी शामिल है।

Keyword: जैविक कृषि, सरकारी नीतियां, कृषि ज्ञान, बाजार पहुंच, मध्य प्रदेश, लाभप्रदता, स्थिरता

परिचय

जैविक कृषि एक कृषि दृष्टिकोण है जो रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों जैसे सिंथेटिक इनपुट पर निर्भरता से बचते हुए प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग पर जोर देता है। यह पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने, जैव विविधता के संरक्षण और फसल रोटेशन, खाद और जैविक कीट नियंत्रण जैसे प्राकृतिक साधनों के माध्यम से मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने पर केंद्रित है।

जैविक कृषि की उत्पत्ति का पता 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में लगाया जा सकता है जब औद्योगिक कृषि के पर्यावरण और स्वास्थ्य प्रभावों के बारे में चिंताएं उभरने लगीं [1]। भारत में सर अल्बर्ट हॉवर्ड और यूरोप में रुडोल्फ स्टेनर जैसे दूरदर्शी लोगों ने प्रकृति के साथ सद्भाव में काम करने वाली कृषि प्रणालियों की वकालत की। उनके सिद्धांतों ने नींव रखी जिसे अब जैविक कृषि के रूप में मान्यता प्राप्त है।

हाल के वर्षों में, जैविक कृषि ने सुरक्षित, पौष्टिक और पर्यावरण के अनुकूल भोजन की बढ़ती मांग की प्रतिक्रिया के रूप में वैश्विक ध्यान आकर्षित किया है। अभ्यास न केवल स्वस्थ पारिस्थितिक तंत्र का समर्थन करता है बल्कि जलवायु परिवर्तन, मिट्टी के क्षरण और जल संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को भी संबोधित करता है। [2]

प्राकृतिक कृषि प्रथाओं की अपनी लंबी परंपरा के साथ भारत ने जैविक कृषि में पुनरुत्थान देखा है, खासकर मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में। "भारत के जैविक हब" के रूप में जाना जाता है, मध्य प्रदेश जैविक कृषि के तहत अपने बड़े क्षेत्र के कारण जैविक कृषि में अग्रणी के रूप में उभरा है और सरकार विभिन्न नीतियों और पहलों के माध्यम से जैविक कृषि को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रही है। यह पुनरुत्थान पारंपरिक कृषि ज्ञान और आधुनिक टिकाऊ प्रथाओं के मिश्रण को दर्शाता है, जिससे यह अन्य राज्यों और देशों के अनुसरण के लिए एक मॉडल बन जाता है।

जैविक कृषि उत्पादन की एक विधि से कहीं अधिक है; यह स्थायी कृषि की दिशा में एक आंदोलन है जो पर्यावरण, किसानों और उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को समान रूप से प्राथमिकता देता है। इसकी पृष्ठभूमि को समझना मध्य प्रदेश में इसकी वर्तमान स्थिति और भविष्य की क्षमता का विश्लेषण करने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

जैविक कृषि के प्रकार

जैविक कृषि दो प्रकार की होती है: शुद्ध जैविक कृषि और एकीकृत जैविक कृषि। [3]

- **शुद्ध जैविक कृषि** - इसमें सभी अप्राकृतिक रसायनों से बचना शामिल है। इसके बजाय, उर्वरक और कीटनाशक प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त किए जाते हैं। इसे शुद्ध जैविक कृषि के रूप में जाना जाता है।
- **एकीकृत जैविक कृषि** - इसमें पारिस्थितिक मानकों और आर्थिक मांगों को पूरा करने के लिए पोषक तत्व प्रबंधन और कीट प्रबंधन के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण शामिल है।

जैविक कृषि के सिद्धांत

इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ ऑर्गेनिक एग्रीकल्चर मूवमेंट्स - IFOAM चार बुनियादी सिद्धांतों का सुझाव देता है जिन पर जैविक कृषि आधारित है: स्वास्थ्य, पारिस्थितिकी, निष्पक्षता और देखभाल। [4]

- **स्वास्थ्य** - जैविक कृषि से मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार होना चाहिए, इस प्रकार पौधों, जानवरों, मनुष्यों और ग्रह को बनाए रखना चाहिए।
- **पारिस्थितिकी** - जैविक कृषि को प्राकृतिक चक्रों और जीवित प्रणालियों का समर्थन करना चाहिए और उन्हें बनाए रखने में मदद करनी चाहिए।
- **निष्पक्षता** - इसे मजबूत रिश्तों पर बनाया जाना चाहिए जो पर्यावरण, सामाजिक न्याय और निष्पक्ष व्यापार से संबंधित निष्पक्षता को प्रोत्साहित करते हैं।

- **देखभाल** - पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियों को देखते हुए जैविक कृषि जिम्मेदारी से की जानी चाहिए।

जैविक कृषि के फायदे और नुकसान

जैविक कृषि को पारंपरिक कृषि पद्धतियों के लिए एक स्थायी विकल्प के रूप में तेजी से पहचाना जाता है। यह पर्यावरण, मानव स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था के

लिए कई लाभ प्रदान करता है [5]। हालांकि, इसकी बढ़ती लोकप्रियता के बावजूद, जैविक कृषि भी चुनौतियां प्रस्तुत करती है जो इसके बड़े पैमाने पर अपनाने में बाधा डाल सकती हैं, खासकर उन क्षेत्रों में जहां पारंपरिक कृषि के तरीके हावी हैं [6]। इसकी व्यवहार्यता और प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए फायदे और नुकसान दोनों को समझना आवश्यक है, खासकर मध्य प्रदेश जैसे राज्य में, जो जैविक कृषि में अग्रणी के रूप में उभरा है।

तालिका 1 जैविक कृषि के फायदे और नुकसान

लाभ	नुकसान
पर्यावरणीय स्थिरता: जैव विविधता को बढ़ावा देता है, मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करता है और प्रदूषण को कम करता है।	कम पैदावार: जैविक कृषि के परिणामस्वरूप अक्सर पारंपरिक कृषि की तुलना में कम फसल की पैदावार होती है।
स्वास्थ्य लाभ: रासायनिक मुक्त, पौष्टिक भोजन का उत्पादन करता है जो खपत के लिए सुरक्षित है।	उच्च लागत: किसानों के लिये जैविक आदान और प्रमाणन प्रक्रियाएँ महँगी हो सकती हैं।
बाजार की मांग: जैविक उत्पादों के लिए बढ़ती उपभोक्ता प्राथमिकता बाजार के अवसरों को बढ़ाती है।	श्रम-गहन: निराई और कीट नियंत्रण जैसी गतिविधियों के लिए अधिक शारीरिक श्रम की आवश्यकता होती है।
मिट्टी की उर्वरता: खाद और फसल रोटेशन के माध्यम से मिट्टी की संरचना और उर्वरता को बढ़ाता है।	बाजारों तक सीमित पहुँच: छोटे किसानों को जैविक उत्पादों के लिये बाजारों तक पहुँचने में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।
जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन: मृदा जल प्रतिधारण में सुधार करता है और सूखे की संभावना को कम करता है।	ज्ञान की आवश्यकता: प्रभावी जैविक प्रथाओं के लिए किसानों को तकनीकी जानकारी की आवश्यकता होती है।
सहायक नीतियां: सरकार और एनजीओ का समर्थन इसे और अधिक सुलभ बनाता है।	संक्रमण अवधि: पारंपरिक कृषि से जैविक कृषि में बदलाव में समय लगता है, जिससे संक्रमण के दौरान आय कम हो जाती है।

हालांकि जैविक कृषि के निर्विवाद लाभ हैं, इसकी चुनौतियों पर सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए ध्यान देने की आवश्यकता है। कम पैदावार, उच्च इनपुट लागत और सीमित बाजार पहुँच जैसे मुद्दों को संबोधित

करना जैविक कृषि को अधिक व्यवहार्य बनाने के लिए महत्वपूर्ण है, खासकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए। पर्याप्त प्रशिक्षण, वित्तीय प्रोत्साहन और बुनियादी

ढांचे का समर्थन प्रदान करने से इन बाधाओं को दूर करने में मदद मिल सकती है।

मध्य प्रदेश में, जैविक कृषि को अपना कृषि उत्पादकता के साथ पारिस्थितिक संरक्षण को संतुलित करने का एक अवसर है। सरकार और गैर सरकारी संगठनों के निरंतर समर्थन के साथ, किसानों और उपभोक्ताओं के बीच बढ़ती जागरूकता के साथ, जैविक कृषि एक स्थायी मॉडल के रूप में विकसित हो सकती है जो पर्यावरणीय और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों को प्रभावी ढंग से संबोधित करती है।

भारत में जैविक कृषि का बाजार

भारत के जैविक कृषि क्षेत्र ने हाल के वर्षों में महत्वपूर्ण वृद्धि देखी है, जो स्वास्थ्य के प्रति जागरूक और पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ खाद्य उत्पादों की बढ़ती उपभोक्ता मांग से प्रेरित है। वित्तीय वर्ष 2021 में, भारत में जैविक खाद्य का बाजार आकार लगभग ₹22 बिलियन था। अनुमानों से संकेत मिलता है कि यह आंकड़ा वित्तीय वर्ष 2025 तक लगभग ₹64 बिलियन तक पहुंचने की संभावना है। [7]

इसके अलावा, भारत में जैविक खाद्य उद्योग का मूल्य 2023 में लगभग ₹131.41 बिलियन था और 2028 तक लगभग ₹625.69 बिलियन तक पहुंचने की ओर अग्रसर है। [7]

मध्य प्रदेश में जैविक कृषि

मध्यप्रदेश में जैविक कृषि का कुल क्षेत्रफल लगभग 16 लाख 37 हजार हेक्टेयर है, जो देश में सर्वाधिक है। जैविक उत्पाद का उत्पादन 14 लाख 2 हजार मीट्रिक टन हुआ, जो क्षेत्रफल की दृष्टि से देश में सर्वाधिक है। जैविक कृषि को प्रोत्साहन के रूप में प्रदेश में कुल 17 लाख 31 हजार हेक्टेयर क्षेत्र जैविक प्रमाणित है, जिसमें से 16 लाख 38 हजार क्षेत्र अपीडा से और 93 हजार

हेक्टेयर क्षेत्र पीजीएस से पंजीकृत है। इस प्रकार पंजीकृत जैविक क्षेत्र में भी मध्यप्रदेश देश में अग्रणी है।

राज्य ने पिछले वित्तीय वर्ष में 2 हजार 683 करोड़ रूपए मूल्य के 5 लाख मीट्रिक टन से अधिक जैविक उत्पादों का निर्यात किया है। प्रदेश के जैविक उत्पादों का निर्यात तेजी से बढ़ रहा है। वर्ष 2020-21 में प्रदेश में 5 लाख 41 हेक्टेयर में जैविक फसलों की बुवाई की गई। अब भारत सरकार के सहयोग से प्रदेश में प्राकृतिक कृषि प्रणाली के तहत क्लस्टर आधारित कार्यक्रम शुरू किया गया है। इस वर्ष प्रदेश में 99 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक कृषि का लक्ष्य है। प्रदेश में जैविक कृषि की अपार संभावनाएं हैं [8]। यहां सभी अनाज फसलों, सब्जियों, फलों, मसालों, सुगंधित और औषधीय फसलों को न्यूनतम रासायनिक इनपुट के उपयोग के साथ लिया जाता है। राज्य में प्राकृतिक चारागाह, प्राकृतिक उपवन, दूरदराज के आदिवासी जिलों में अप्रदूषित कृषि भूमि का बड़ा क्षेत्र और नर्मदा घाटी के उपजाऊ क्षेत्र हैं। इसके साथ ही प्रदेश के प्राकृतिक और घने जंगलों में पलाश, रोहिणी आदि फूल भी बहुतायत में उपलब्ध हैं।

प्रदेश को जैविक कृषि में अग्रणी बनाने में परम्परागत कृषि विकास योजना का भी योगदान रहा है। इस स्कीम के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा अब तक 3,728 क्लस्टर अनुमोदित किए गए हैं। इन क्लस्टरों में लगभग एक लाख 16 हजार किसान शामिल हैं, जो सभी पीजीएस पोर्टल पर पंजीकृत हैं। पंजीकृत किसानों के जैविक उत्पादों की मार्केटिंग में स्थानीय स्तर पर और जैविक केन्द्रों, मण्डला एवं जबलपुर के माध्यम से सहायता दी जा रही है।

प्रदेश में जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय विकास योजना में वर्ष 2008 से अब तक 20 परियोजनाएं स्वीकृत की गई हैं। नर्मदा तट के सभी जिलों के सभी विकास खण्डों में मुख्य रूप से एनएडीईपी एवं वर्मी कम्पोस्ट पिट निर्माण, जैविक खाद एवं पोषक तत्व वितरण, जैविक कृषि जागरूकता अभियान, जैविक

फार्मों की स्थापना, हरी खाद, जैव उर्वरक हेतु सहायता, विनिर्माण इकाइयों की स्थापना, नर्मदा तट के गाँवों में बायोगैस संयंत्रों का निर्माण और जैव उर्वरकों ने राज्य में जैविक कृषि को गति दी है। [9]

सरकारी नीतियां और किसानों की भूमिका

सरकारी नीतियां

सरकारी नीतियां किसानों को सहायता प्रदान करके, बाजार पहुंच सुनिश्चित करके और टिकाऊ कृषि प्रथाओं के लिए एक सक्षम वातावरण बनाकर जैविक कृषि को बढ़ावा देने और अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत में, केंद्र और राज्य दोनों सरकारों ने जैविक कृषि का समर्थन करने के लिए कई पहल लागू की हैं: [10]

- **परंपरागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई):** यह प्रमुख कार्यक्रम क्लस्टर आधारित जैविक कृषि को बढ़ावा देता है और बीज, जैव-उर्वरक और जैविक प्रमाणन जैसे इनपुट के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है।
- **पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिये मिशन ऑर्गेनिक वैल्यू चेन डेवलपमेंट (MOVCDNER):** पूर्वोत्तर राज्यों में जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिये डिज़ाइन की गई यह योजना जैविक उत्पादों के प्रसंस्करण और विपणन सहित मूल्य श्रृंखला विकास पर केंद्रित है।
- **जैविक कृषि पोर्टल:** यह डिजिटल प्लेटफॉर्म किसानों को खरीदारों से जोड़ता है, जैविक उत्पादों के प्रत्यक्ष विपणन की सुविधा प्रदान करता है और बिचौलियों की भूमिका को कम करता है।
- **सब्सिडी और प्रमाणन समर्थन:** सरकार जैविक आदानों के लिए सब्सिडी और जैविक प्रमाणन प्राप्त करने के लिए किसानों को वित्तीय

सहायता प्रदान करती है, जो घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुँचने के लिये आवश्यक है।

- **राज्य-विशिष्ट कार्यक्रम:** मध्य प्रदेश ने विभिन्न नीतियों की शुरुआत की है, जैसे प्रशिक्षण कार्यक्रम, जैविक कृषि मेले और किसानों को जैविक प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए प्रोत्साहन। उत्पादन और व्यापार को बढ़ावा देने के लिए राज्य में जैविक कृषि क्लस्टर और बाजार नेटवर्क भी हैं।

किसानों की भूमिका

किसान जैविक कृषि की रीढ़ हैं और इसकी सफलता में आवश्यक भूमिका निभाते हैं। उनके प्रयास, नवाचार और स्थायी प्रथाओं के प्रति प्रतिबद्धता जैविक कृषि के विकास को प्रेरित करती है: [11]

- **सतत् प्रथाओं को अपनाना:** किसान मिट्टी की उर्वरता में सुधार और रासायनिक आदानों पर निर्भरता कम करने के लिये फसल रोटेशन, प्राकृतिक कीट प्रबंधन और खाद बनाने जैसे पारंपरिक तरीकों का उपयोग करते हैं।
- **सहकारिता का गठन:** मध्य प्रदेश और अन्य राज्यों में कई किसानों ने जैविक कृषि सहकारी समितियों का गठन किया है, जो सामूहिक निर्णय लेने, संसाधन साझा करने और जैविक उपज के विपणन में मदद करते हैं।
- **ज्ञान साझा करना:** किसान अक्सर सामुदायिक नेटवर्क के माध्यम से अपने अनुभवों और तकनीकों को साझा करते हैं, जिससे दूसरों को जैविक कृषि को कुशलतापूर्वक अपनाने में मदद मिलती है।
- **बाजार आपूर्ति में योगदान:** जैविक उपज की कृषि करके, किसान भारत और निर्यात बाजारों

दोनों में रासायनिक मुक्त, उच्च गुणवत्ता वाले खाद्य उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करते हैं। उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश भारत के जैविक फसल उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

- **जैव विविधता संरक्षण में भूमिका:** जैविक किसान पारंपरिक बीज किस्मों को संरक्षित करने, फसल विविधता को बढ़ावा देने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जैविक कृषि में किसानों के सामने चुनौतियां

जबकि जैविक कृषि कई लाभ प्रदान करती है, यह कई चुनौतियां भी प्रस्तुत करती है जो इसके व्यापक रूप से अपनाने में बाधा बन सकती हैं, खासकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए। ये चुनौतियाँ आर्थिक, तकनीकी और बाज़ार से संबंधित मुद्दों से उपजी हैं, जिससे कई किसानों के लिए पारंपरिक से जैविक कृषि के तरीकों में संक्रमण करना मुश्किल हो जाता है। [12]

तालिका 2 जैविक कृषि में किसानों के सामने चुनौतियां

चुनौती	या किस्म
कम पैदावार	सिंथेटिक उर्वरकों और कीटनाशकों की अनुपस्थिति के कारण पारंपरिक तरीकों की तुलना में जैविक कृषि में अक्सर कम फसल की पैदावार होती है।
उत्पादन की उच्च लागत	जैविक आदान, जैसे जैविक बीज, जैव-उर्वरक और खाद, अक्सर पारंपरिक विकल्पों की तुलना में अधिक महंगे होते हैं। प्रमाणन प्रक्रियाएं भी लागत में जोड़ती हैं।
ऑर्गेनिक इनपुट तक सीमित पहुंच	किसान गुणवत्ता वाले जैविक बीज, उर्वरक और अन्य सामग्रियों तक पहुँचने के लिए संघर्ष कर सकते हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर अनुपलब्ध या विलंबित होते हैं।
ज्ञान और प्रशिक्षण अंतराल	कई किसानों को प्रभावी जैविक कृषि के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल की कमी होती है, जैसे कीट प्रबंधन और फसल रोटेशन तकनीक।
कीट और रोग प्रबंधन	जैविक कृषि कीट और रोग नियंत्रण के लिए प्राकृतिक तरीकों पर निर्भर करती है, जो सिंथेटिक विकल्पों के रूप में प्रभावी नहीं हो सकती हैं, जिससे फसल को नुकसान होता है।
बाजार पहुंच और मूल्य में उतार-चढ़ाव	मांग और कीमतों में उतार-चढ़ाव और भंडारण और परिवहन के लिए सीमित बुनियादी ढांचे के साथ जैविक उत्पादों को बाजार पहुंच में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।
प्रमाणन प्रक्रिया	जैविक प्रमाणन प्रक्रिया महंगी और समय लेने वाली है, जिसके लिए दस्तावेज़ीकरण और निरीक्षण की आवश्यकता होती है, जो छोटे किसानों के लिए एक बाधा हो सकती है।
मृदा उर्वरता और संक्रमण काल	पारंपरिक कृषि से जैविक कृषि में संक्रमण से मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादकता में अस्थायी गिरावट आ सकती है, जिसके परिणामस्वरूप वित्तीय नुकसान हो सकता है।
जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय कारक	अप्रत्याशित मौसम की स्थिति, जैसे सूखा और भारी वर्षा, जैविक कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है, जो प्राकृतिक प्रक्रियाओं पर निर्भर करती है।

साहित्य समीक्षा

'जैविक कृषि' की घटना भूमि का पोषण करने और कृषि की हमारी पारंपरिक पद्धति यानी रसायनों, कीटनाशकों और उर्वरकों से मुक्त होकर मिट्टी को पुनर्जीवित करने का एकमात्र समाधान है। उच्च पोषण गुणवत्ता वाले भोजन और पर्याप्त मात्रा में उत्पादन करने के लिए रसायनों, सिंथेटिक सामग्री, कीटनाशकों और विकास हार्मोन का उपयोग न करने का चयन करके सतत विकास के लिए यह एक संभावित कदम है। पिछले 10 वर्षों के दौरान प्रमाणित जैविक कृषि के तहत क्षेत्र में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। वर्ष 2003-04 के दौरान प्रमाणित जैविक कृषि के अंतर्गत 42,000 हेक्टेयर से कम भूमि के साथ जैविक कृषि के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र अगले 5 वर्षों के दौरान लगभग 25 गुणा बढ़कर वर्ष 2008-09 के दौरान 12 मिलियन हेक्टेयर हो गया। यह सीमित अल्पकालिक शोध निष्कर्षों से स्पष्ट है कि कई फसलें जैविक प्रबंधन के लिए बेहतर प्रतिक्रिया देती हैं, खासकर 2-3 साल की प्रारंभिक रूपांतरण अवधि के बाद। [13]

अध्ययन से संकेत मिलता है कि, किसानों की शिक्षा की स्थिति, किसानों का कृषि का अनुभव। किसानों का फार्म आकार, किसानों की कुल वाषक आय, किसानों का पशुधन कब्जा, सूचना स्रोतों का उपयोग, किसानों का विस्तार संपर्क, किसानों का मास मीडिया एक्सपोजर, किसानों का बाजार उन्मुखीकरण, जैविक कृषि पद्धतियों के संबंध में किसानों के गोद लेने के स्तर के साथ महत्वपूर्ण रूप से सहसंबद्ध पाया गया। केवल किसानों की आयु को जैविक कृषि पद्धतियों के संबंध में किसानों के गोद लेने के स्तर के साथ गैर-महत्वपूर्ण रूप से सहसंबद्ध पाया गया। अध्ययन के शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला कि अध्ययन क्षेत्र में, जैविक कृषि प्रथाओं के बारे में किसानों का गोद लेने का स्तर मध्यम था। यह केवीके और अन्य कृषि विभागों द्वारा जैविक कृषि प्रथाओं के बारे में आयोजित

विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण के माध्यम से किसानों के ज्ञान के संपर्क में आने के कारण हो सकता है। [14]

जैविक कृषि के प्रति किसानों के दृष्टिकोण का अध्ययन करने के लिए मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में अध्ययन किया गया था। जबलपुर जिले में 7 ब्लॉक हैं, जिनमें से जबलपुर ब्लॉक को यादृच्छिक रूप से चुना गया था और सिहोरा ब्लॉक को अन्य ब्लॉक की तुलना में जैविक कृषि के तहत अधिकतम पंजीकृत किसान होने के कारण अध्ययन के लिए चुना गया था। इस प्रकार, कुल 120 उत्तरदाता नमूना आकार बनाते हैं। परिणाम बताते हैं कि अधिकांश जैविक कृषि के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण रखते थे। [15]

भारत प्राचीन काल से कृषि उन्मुख देश के रूप में जाना जाता है। जैविक कृषि प्रणाली मिट्टी के रासायनिक, जैविक और भौतिक गुणों को बढ़ाने के लिए मिट्टी के कार्बनिक पदार्थों के प्रबंधन पर निर्भर करती है। कार्बनिक प्रणालियों में मिट्टी की उर्वरता प्रबंधन के बुनियादी सिद्धांतों में से एक यह है कि पौधों का पोषण जैविक रूप से व्युत्पन्न पोषक तत्वों पर निर्भर करता है। अधिकांश देश स्वस्थ फसलों, फलों और सब्जियों के कारण जैविक कृषि पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। अध्ययन से यह पाया गया है कि सभी क्षेत्रों में जैविक कृषि भूमि में वृद्धि हुई है। [16]

शोधकर्ताओं ने समीक्षा की है कि जैविक कृषि भारतीय किसानों को अपने उत्पादों के लिए एक अतिरिक्त मूल्य प्राप्त करने की संभावना प्रदान करती है। पौंडा क्षेत्र/गोवा में काम करने वाले लोग एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और अत्यधिक संरक्षित जैव विविधता से लाभान्वित होते हैं जो उन्हें भविष्य में जीआईएएचएस (वैश्विक रूप से महत्वपूर्ण कृषि विरासत प्रणाली) परियोजना के लिए हकदार बना सकते हैं जो इन सुंदर परिदृश्यों को नष्ट होने से रोकेंगी। मसाला बागान हर किसी के लिए एक जीवंत प्राकृतिक विज्ञान और इतिहास का सबक है और पर्यटकों के लिए एक

आकर्षण है जो यहां एक सुखद वातावरण, समृद्ध वनस्पतियों और जीवों, ग्रामीण पर्यटन, आयुर्वेदिक चिकित्सा देखभाल और प्रकृति के संपर्क में अवकाश गतिविधियों की एक श्रृंखला पाते हैं। इस अध्ययन में खेत में बहु कार्यक्षमता से जुड़े जैविक कृषि द्वारा पेश किए गए लाभों के साथ-साथ भारतीय समाज में तेजी से बदलाव और इसकी जीवन शैली में प्रभावों से उत्पन्न खतरों से निपटा जाता है। [17]

अध्ययन के उद्देश्य

1. मध्य प्रदेश में जैविक कृषि की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।
2. मध्य प्रदेश में किसानों के बीच जैविक कृषि को अपनाने को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करना।
3. मध्य प्रदेश में जैविक कृषि के विकास और स्थिरता पर सरकारी नीतियों के प्रभाव का आकलन करना।
4. जैविक कृषि प्रथाओं को अपनाने और बनाए रखने में किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों का मूल्यांकन करना।
5. मध्य प्रदेश में किसानों के लिए जैविक कृषि की बाजार क्षमता और आर्थिक व्यवहार्यता की जांच करना।

अध्ययन की परिकल्पना

H01: मध्य प्रदेश में जैविक कृषि को अपनाने की दर पर सरकारी नीतियों का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

H02: मध्य प्रदेश में जैविक कृषि के बारे में ज्ञान के स्तर और जैविक फसलों की उपज के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H03: मध्य प्रदेश में जैविक कृषि की लाभप्रदता पर बाजार पहुंच का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

अनुसंधान क्रियाविधि

यह अध्ययन एक सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित है और एक संरचित मात्रात्मक दृष्टिकोण को अपनाता है। इस पद्धति का प्राथमिक उद्देश्य मध्य प्रदेश में जैविक कृषि की चुनौतियों, अवसरों और समग्र स्थिति को समझने के लिए किसानों, सरकारी अधिकारियों और बाजार सहभागियों सहित प्रमुख हितधारकों से प्रतिक्रियाओं को इकट्ठा करना और उनका विश्लेषण करना है।

जनसंख्या और नमूना

अध्ययन ने तीन प्रमुख उत्तरदाता समूहों को लक्षित किया: सक्रिय रूप से जैविक कृषि का अभ्यास करने वाले किसान, कृषि नीतियों को बढ़ावा देने और लागू करने में शामिल सरकारी अधिकारी, और बाजार हितधारक, जैसे खरीदार, वितरक और जैविक उत्पादों में काम करने वाले खुदरा विक्रेता। कुल नमूना आकार 425 उत्तरदाता है, जो निम्नानुसार वितरित किया गया है:

विभिन्न क्षेत्रों और कृषि के अनुभवों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए किसानों के लिए एक स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना तकनीक का उपयोग किया गया है। सरकारी अधिकारियों और बाजार हितधारकों के लिए, क्षेत्र में विशेष ज्ञान और अनुभव वाले प्रतिभागियों को शामिल करने के लिए एक उद्देश्यपूर्ण नमूना तकनीक नियोजित की गई है।

डेटा संग्रहण

प्राथमिक डेटा व्यापक और मानकीकृत प्रतिक्रियाओं को इकट्ठा करने के लिए डिज़ाइन किए गए एक संरचित प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किया गया है।

प्रश्नावली में विशेष रूप से बंद-समाप्त प्रश्न शामिल हैं और जैविक कृषि प्रथाओं, चुनौतियों, सरकारी नीतियों और बाजार की गतिशीलता से संबंधित धारणाओं, अनुभवों और विचारों को मापने के लिए 5-बिंदु लिंक पैमाने का उपयोग किया गया है। सर्वेक्षण को व्यापक पहुंच और उच्च प्रतिक्रिया दर सुनिश्चित करने के लिए व्यक्तिगत रूप से और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रशासित किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रश्नावली से एकत्र किए गए डेटा को IBM SPSS v26 का उपयोग करके व्यवस्थित रूप से कोडित और विश्लेषण किया गया है।

आकड़ा विश्लेषण और व्याख्या

यह खंड उत्तरदाताओं से एकत्रित आंकड़ों और उनके विश्लेषण को प्रदर्शित करता है।

तालिका 3 आयु

आयु		आवृत्ति	प्रतिशत	वैध प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
मान्य	18-25 वर्ष	52	12.2	12.2	12.2
	26-35 वर्ष	119	28.0	28.0	40.2
	36-45 वर्ष	142	33.4	33.4	73.6
	45 वर्ष से अधिक	112	26.4	26.4	100.0
	कुल	425	100.0	100.0	

प्रस्तुत तालिका से यह स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षण में कुल 425 उत्तरदाताओं में से सबसे बड़ा समूह 36-45 वर्ष की आयु का है, जिसकी संख्या 142 (33.4%) है। इसके बाद 26-35 वर्ष के आयु वर्ग के उत्तरदाता आते हैं, जिनकी संख्या 119 (28.0%) है। 45 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के प्रतिभागियों की संख्या 112 (26.4%) है, जबकि 18-25 वर्ष के सबसे कम उत्तरदाता, केवल 52

(12.2%), इस सर्वेक्षण में शामिल हुए। यह डेटा दर्शाता है कि जैविक कृषि और उससे संबंधित गतिविधियों में मुख्य रूप से मध्य आयु वर्ग के व्यक्तियों की भागीदारी सबसे अधिक है, जबकि युवा (18-25 वर्ष) और वृद्ध (45 वर्ष से अधिक) प्रतिभागियों की भागीदारी तुलनात्मक रूप से कम है।

तालिका 4 भूमिका/पेशा

भूमिका/पेशा		आवृत्ति	प्रतिशत	वैध प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
मान्य	किसान	303	71.3	71.3	71.3
	सरकारी अधिकारी	39	9.2	9.2	80.5
	बाजार भागीदार (उदाहरण: खरीदार, खुदरा विक्रेता)	83	19.5	19.5	100.0
	कुल	425	100.0	100.0	

प्रस्तुत तालिका से यह स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षण में कुल 425 उत्तरदाताओं में से सबसे बड़ा समूह किसान (71.3%) है, जिसकी संख्या 303 है। इसके बाद बाजार भागीदार (उदाहरण: खरीदार, खुदरा विक्रेता) का समूह आता है, जिनकी संख्या 83 (19.5%) है। सबसे कम संख्या में सरकारी अधिकारी (9.2%) शामिल हैं, जिनकी संख्या 39 है।

तालिका 5 जैविक कृषि/संबंधित गतिविधियों में अनुभव के वर्ष

जैविक कृषि/संबंधित गतिविधियों में अनुभव के वर्ष		आवृत्ति	प्रतिशत	वैध प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
मान्य	3 वर्ष से कम	183	43.1	43.1	43.1
	3-5 वर्ष	173	40.7	40.7	83.8
	6-10 वर्ष	69	16.2	16.2	100.0
	कुल	425	100.0	100.0	

प्रस्तुत तालिका से यह स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षण में कुल 425 उत्तरदाताओं में से सबसे बड़ा समूह 3 वर्ष से कम के अनुभव वाले लोगों का है, जिनकी संख्या 183 (43.1%) है। इसके बाद 3-5 वर्ष के अनुभव वाले उत्तरदाता आते हैं, जिनकी संख्या 173 (40.7%) है। 6-10 वर्ष के अनुभव वाले प्रतिभागियों की संख्या 69 (16.2%) है। यह डेटा दर्शाता है कि जैविक कृषि और उससे संबंधित गतिविधियों में मुख्य रूप से 3 वर्ष से कम और 3-5 वर्ष के अनुभव वाले व्यक्तियों की भागीदारी है, जबकि 6-10 वर्ष के अनुभव वाले प्रतिभागियों की भागीदारी तुलनात्मक रूप से कम है।

तालिका 4 उत्तरदाताओं के विचार

प्रश्न/कथन	दृढ़ता से सहमत	सहमत	तटस्थ	असहमत	दृढ़ता से असहमत
मध्य प्रदेश में जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए सरकारी नीतियां सहायक हैं।	213	90	7	48	67
सरकारी सब्सिडी और वित्तीय प्रोत्साहन जैविक कृषि को अधिक व्यवहार्य बनाते हैं।	212	76	53	5	79
जैविक कृषि के बारे में जागरूकता कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं।	191	39	88	39	68
सरकार द्वारा जैविक कृषि के लिए उचित प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।	83	121	70	140	11
जैविक कृषि से संबंधित समस्याओं को हल करने में सरकार सक्रिय रूप से मदद करती है।	182	80	146	13	4
हाल के वर्षों में जैविक किसानों की संख्या लगातार बढ़ रही है।	54	66	139	77	89
पर्याप्त समर्थन मिलने पर किसान जैविक कृषि को अपनाने के लिए तैयार हैं।	182	116	64	21	42
मध्य प्रदेश में जैविक कृषि की पद्धतियां अधिक प्रचलित हो रही हैं।	268	51	50	54	2
जैविक कृषि में बदलाव की लागत अपनाने में बाधा बनती है।	229	90	48	15	43
किसान जैविक कृषि के तरीकों को पूरी तरह अपनाने में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करते हैं।	156	123	52	15	79
किसान और बाजार भागीदार जैविक कृषि की तकनीकों के बारे में अच्छी तरह से जानकारी रखते हैं।	160	104	78	7	76
जैविक कृषि के लाभों के बारे में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध है।	167	63	126	48	21
भागीदारों को जैविक प्रमाणन प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी है।	140	171	98	0	16
किसान पारंपरिक और जैविक कृषि के बीच के अंतर को समझते हैं।	166	164	60	14	21
प्रशिक्षण कार्यक्रम मध्य प्रदेश में जैविक कृषि के ज्ञान को बढ़ाते हैं।	120	90	76	64	75
जैविक फसलों की पैदावार बाजार की मांगों को पूरा करने के लिए पर्याप्त है।	117	105	84	13	106

जैविक कृषि सभी मौसमों में निरंतर फसल उत्पादन सुनिश्चित करती है।	190	83	92	23	37
जैविक तरीकों से किसानों को फसल खराब होने की समस्याएं कम होती हैं।	204	108	50	37	26
जैविक फसल की पैदावार पारंपरिक कृषि की पैदावार के बराबर है।	193	100	33	63	36
जैविक कृषि में अच्छे अभ्यास फसल उत्पादकता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।	165	77	79	15	89
मध्य प्रदेश में जैविक उत्पाद खरीदारों के लिए आसानी से उपलब्ध हैं।	150	77	103	36	59
जैविक किसानों के लिए पर्याप्त विपणन चैनल उपलब्ध हैं।	129	106	90	53	47
किसानों को बाजार में अपने जैविक उत्पाद के लिए उचित मूल्य मिलता है।	178	111	66	43	27
स्थानीय और राष्ट्रीय बाजारों में जैविक उत्पादों की उच्च मांग है।	187	95	72	38	33
उचित बुनियादी ढांचे की कमी जैविक उत्पादों के विपणन को प्रभावित करती है।	157	116	66	31	55
मध्य प्रदेश में जैविक कृषि एक लाभकारी उद्यम है।	171	83	61	45	65
किसान जैविक उत्पादों से पारंपरिक फसलों की तुलना में बेहतर लाभ कमाते हैं।	175	95	68	29	58
जैविक कृषि की लाभप्रदता इसे अपनाने के प्रयासों को न्यायसंगत ठहराती है।	183	76	81	43	42
जैविक कृषि समय के साथ इनपुट लागत को कम करने में मदद करती है।	139	100	76	89	21
बाजार के रुझान जैविक कृषि की लाभप्रदता का समर्थन करते हैं।	169	103	102	21	30

प्रस्तुत तालिका से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न कथनों पर उत्तरदाताओं की राय में व्यापक विविधता है। अधिकांश उत्तरदाता (213) इस बात से दृढ़ता से सहमत हैं कि मध्य प्रदेश में जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए सरकारी नीतियां सहायक हैं, जबकि 212 उत्तरदाता सहमत हैं कि सरकारी सब्सिडी और वित्तीय प्रोत्साहन जैविक कृषि को अधिक व्यवहार्य बनाते हैं। इसके अलावा, 191 उत्तरदाता यह मानते हैं कि जैविक

कृषि के बारे में जागरूकता कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं, जबकि 121 उत्तरदाता यह मानते हैं कि सरकार द्वारा जैविक कृषि के लिए उचित प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

सरकार द्वारा जैविक कृषि के लिए समस्याओं के समाधान में सक्रिय भागीदारी पर 182 उत्तरदाता सहमत हैं। इस बात से भी अधिकतर लोग सहमत हैं कि

किसानों को जैविक कृषि को अपनाने के लिए पर्याप्त समर्थन मिलता है (182 उत्तरदाता सहमत हैं)। इसके अलावा, जैविक कृषि की पद्धतियों के बारे में भी अधिकांश उत्तरदाता सहमत हैं (268 उत्तरदाता), जो दर्शाता है कि जैविक कृषि की लोकप्रियता बढ़ रही है।

हालांकि, कुछ उत्तरदाता जैविक कृषि की लागत में बाधाओं का सामना करने की बात करते हैं (229 उत्तरदाता दृढ़ता से सहमत हैं)। किसानों को जैविक कृषि के तरीकों को अपनाने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है (156 उत्तरदाता सहमत हैं), और इस प्रक्रिया में बाजार और किसान के बीच समन्वय की कमी हो सकती है। इसके बावजूद, अधिकांश उत्तरदाता मानते हैं कि जैविक कृषि से फसल उत्पादकता और लाभ पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है (204 उत्तरदाता दृढ़ता से सहमत हैं)।

आखिरकार, जैविक उत्पादों के विपणन चैनल, मांग, और लाभ की बात करें तो अधिकांश उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि इन उत्पादों का विपणन ठीक से होता है, और किसानों को उचित मूल्य मिलता है (178 उत्तरदाता सहमत हैं)। कुल मिलाकर, यह डेटा दर्शाता है कि जैविक कृषि के संदर्भ में सरकारी नीतियां, समर्थन, और जागरूकता कार्यक्रमों का प्रभाव महत्वपूर्ण है, हालांकि कुछ बाधाएं भी हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

परिकल्पना परीक्षण

H01: मध्य प्रदेश में जैविक कृषि को अपनाने की दर पर सरकारी नीतियों का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

एनोवा					
जैविक कृषि अपनाने की दर					
	वर्गों का योग	df	मीन स्क्वायर	F	Sig.
समूहों के बीच	2207.804	10	220.780	207.320	.000
समूहों के भीतर	436.619	410	1.065		
कुल	2644.423	420			

शून्य परिकल्पना (एच01) में कहा गया है कि मध्य प्रदेश में जैविक कृषि को अपनाने की दर पर सरकारी नीतियों का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा है। एनोवा परिणाम 0.000 के पी-मान के साथ 207.320 का एफ-आंकड़ा दिखाते हैं। चूंकि पी-वैल्यू (sig.) 0.05 से कम है, इसलिए हम शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर सकते हैं और निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मध्य प्रदेश में जैविक कृषि को अपनाने की दर पर सरकारी नीतियों का सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव है। समूहों के बीच वर्गों का योग 2207.804 है, जो विभिन्न समूहों के कारण परिवर्तनशीलता का संकेत

देता है, जबकि समूहों के भीतर वर्गों का योग 436.619 है, जो व्यक्तिगत समूहों के भीतर परिवर्तनशीलता का प्रतिनिधित्व करता है। बड़े एफ-वैल्यू और छोटे पी-वैल्यू से पता चलता है कि समूहों के बीच अंतर महत्वपूर्ण हैं और सरकारी नीतियों का जैविक कृषि को अपनाने पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता है।

H02: मध्य प्रदेश में जैविक कृषि के बारे में ज्ञान के स्तर और जैविक फसलों की उपज के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

सहसंबंध		जैविक कृषि के बारे में ज्ञान का स्तर	जैविक फसलों की पैदावार
जैविक कृषि के बारे में ज्ञान का स्तर	पियर्सन सहसंबंध	1	.919**
	Sig. (2-tailed)		.000
	N	421	421
जैविक फसलों की पैदावार	पियर्सन सहसंबंध	.919**	1
	Sig. (2-tailed)	.000	
	N	421	421

** . सहसंबंध 0.01 स्तर (2-tailed) पर महत्वपूर्ण है।

शून्य परिकल्पना (H02) यह मानती है कि मध्य प्रदेश में जैविक कृषि के बारे में ज्ञान के स्तर और जैविक फसलों की उपज के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। सहसंबंध विश्लेषण जैविक कृषि और जैविक फसलों की उपज के बारे में ज्ञान के स्तर के बीच 0.919 का पियर्सन सहसंबंध गुणांक दिखाता है। इस सहसंबंध के लिए पी-मान (sig.) 0.000 है, जो 0.01 से कम है, यह दर्शाता है कि सहसंबंध 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। यह मजबूत सकारात्मक सहसंबंध बताता है कि जैसे-जैसे जैविक

कृषि के बारे में ज्ञान का स्तर बढ़ता है, जैविक फसलों की उपज भी बढ़ती जाती है। इसलिए, हम शून्य परिकल्पना को खारिज कर सकते हैं और निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मध्य प्रदेश में जैविक कृषि और फसल की उपज के बारे में ज्ञान के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है।

H03: मध्य प्रदेश में जैविक कृषि की लाभप्रदता पर बाजार पहुंच का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

एनोवा					
जैविक कृषि की लाभप्रदता					
	वर्गों का योग	df	मीन स्क्वायर	F	हस्ताक्षर।
समूहों के बीच	2129.018	12	177.418	126.398	.000
समूहों के भीतर	572.687	408	1.404		
कुल	2701.705	420			

शून्य परिकल्पना (एचओआई) से पता चलता है कि मध्य प्रदेश में जैविक कृषि की लाभप्रदता पर बाजार पहुंच का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा है। एनोवा परिणाम 0.000 के पी-मान के साथ 126.398 का एफ-आंकड़ा दिखाते हैं। चूंकि पी-वैल्यू (sig.) 0.05 से कम है, इसलिए हम शून्य परिकल्पना को खारिज कर

सकते हैं और निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मध्य प्रदेश में जैविक कृषि की लाभप्रदता पर बाजार पहुंच का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। समूहों के बीच वर्गों का योग 2129.018 है, यह दर्शाता है कि विभिन्न बाजार पहुंच समूहों के बीच परिवर्तनशीलता पर्याप्त है। समूहों के भीतर वर्गों का योग 572.687 है, जो प्रत्येक समूह

के भीतर परिवर्तनशीलता का प्रतिनिधित्व करता है। महत्वपूर्ण एफ-वैल्यू और छोटे पी-वैल्यू से पता चलता है कि बाजार पहुंच के विभिन्न स्तरों के कारण लाभप्रदता में अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है, जिसका अर्थ है कि बाजार पहुंच वास्तव में मध्य प्रदेश में जैविक कृषि की लाभप्रदता को प्रभावित करती है।

समाप्ति

इस अध्ययन के निष्कर्ष स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि कई प्रमुख कारक मध्य प्रदेश में जैविक कृषि को अपनाने, विकास और लाभप्रदता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। पूरे शोध में किए गए सांख्यिकीय विश्लेषण इस बात के पुख्ता सबूत देते हैं कि सरकारी नीतियां, जैविक कृषि के बारे में ज्ञान का स्तर और बाजार पहुंच सभी अभिन्न घटक हैं जो इस क्षेत्र में जैविक कृषि की सफलता में योगदान करते हैं। सबसे पहले, अध्ययन से पता चलता है कि सरकारी नीतियां किसानों को जैविक कृषि प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आंकड़ों से पता चलता है कि जब नीतियां अनुकूल होती हैं और वित्तीय प्रोत्साहन या सब्सिडी होती है, तो किसान टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल कृषि के तरीकों को अपनाने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं। यह खोज जैविक कृषि के भविष्य को आकार देने में निरंतर सरकारी समर्थन के महत्व को रेखांकित करती है। यह नीति निर्माताओं के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डालता है जो न केवल जैविक कृषि को बढ़ावा देता है बल्कि किसानों को पारंपरिक तरीकों से जैविक प्रथाओं में संक्रमण के लिए आवश्यक संसाधन भी प्रदान करता है। दूसरे, जैविक कृषि के बारे में ज्ञान का स्तर जैविक फसलों की उपज पर प्रत्यक्ष और महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। अध्ययन में जैविक कृषि के तरीकों और उनकी फसल की उपज के बारे में किसानों के ज्ञान के बीच एक मजबूत सकारात्मक संबंध पाया गया। इससे पता चलता है कि

किसानों को जैविक कृषि के लाभों और तकनीकों के बारे में शिक्षित करने से बेहतर फसल उत्पादकता हो सकती है। इसलिए, कृषि शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों में निवेश जारी रखना आवश्यक है जो किसानों को जैविक कृषि की क्षमता को अधिकतम करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस करते हैं। ये कार्यक्रम न केवल फसलों की गुणवत्ता में सुधार करेंगे बल्कि यह भी सुनिश्चित करेंगे कि किसानों को नवीनतम जैविक कृषि तकनीकों और नवाचारों के बारे में अच्छी तरह से सूचित किया जाए। अंत में, जैविक कृषि की लाभप्रदता का निर्धारण करने में बाजार पहुंच को एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में पहचाना गया था। शोध में निष्कर्ष निकाला गया कि जिन किसानों की बाजारों तक बेहतर पहुंच है, वे अपनी जैविक कृषि गतिविधियों से उच्च लाभप्रदता का आनंद लेने की अधिक संभावना रखते हैं। यह मजबूत बाजार संबंध बनाने के महत्व पर प्रकाश डालता है जो जैविक किसानों को स्थानीय और राष्ट्रीय दोनों बाजारों से जोड़ता है। बुनियादी ढांचे, परिवहन और बाजार पहुंच में सुधार किसानों को अपने उत्पादों को उचित मूल्य पर बेचने का अवसर प्रदान करेगा, जो बदले में अधिक किसानों को जैविक कृषि में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करेगा। यह सुनिश्चित करना कि जैविक उत्पाद उपभोक्ताओं तक कुशलतापूर्वक पहुंचें, जैविक कृषि को एक लाभदायक और टिकाऊ उद्यम बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। अंत में, यह अध्ययन मध्य प्रदेश में जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर देता है। अनुकूल सरकारी नीतियों, किसानों के लिए ज्ञान और प्रशिक्षण में वृद्धि, और बेहतर बाजार पहुंच का संयोजन इस क्षेत्र में जैविक कृषि के विकास और लाभप्रदता में काफी वृद्धि कर सकता है। यह स्पष्ट है कि ये कारक अन्योन्याश्रित हैं और एक ऐसा वातावरण बनाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए जहां जैविक कृषि पनप सके। भविष्य के प्रयासों को जैविक कृषि की

दीर्घकालिक सफलता का समर्थन करने के लिए इन क्षेत्रों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह मध्य प्रदेश के कृषि परिदृश्य के भीतर एक स्थायी और लाभदायक क्षेत्र बन जाए।

संदर्भ

- [1] A. S. Sankar and K. V. Reddy, "Recent Trends in Organic Farming in India: A Study," vol. 10, no. 7, pp. 2320–2882, 2022, [Online]. Available: www.ijcrt.org.
- [2] देवपवित्र, चैधरीकृष्ण, and अग्निहोत्रीकृष्ण मुरारी, "जैविक खेती अपनाओ वर्तमान और भविष्य बचाओ," pp. 9–11, 2020.
- [3] मौर्यके.एल. and कुशवाहाचाँदनी, "भारत में जैविक खेती अनुसंधान: वर्तमान स्थिति और भविष्य की राह," *Int. J. Adv. Soc. Sci.*, vol. 11, no. 1, pp. 23–30, 2023, doi: 10.52711/2454-2679.2023.00004.
- [4] N. Dahiya, "The Perception Of Farmers Toward Organic Farming In Bhopal District Of M.P.," no. June, 2022.
- [5] M. Nimole and A. Panwar, "Key Challenges Faced by Farmers in Transitioning to and Sustaining Organic Farming Practices in Madhya Pradesh," vol. I, no. Xlvii, pp. 2013–2016, 2024.
- [6] S. Narayanan, "Organic farming in India: relevance, problems and constraints," *Nabard*, pp. 1–93, 2005.
- [7] Agriculture Department, "State Policy on Organic Farming in Madhya Pradesh," no. August, p. 26, 2010.
- [8] N. Ravisankar *et al.*, "Organic farming research in India: Potential technologies and way forward," *Indian J. Agron.*, vol. 66, no. 5th, pp. 142–162, 2021.
- [9] R. And and S. Titus, "Organic Farmers and Farms In Madhya Pradesh," 2006, [Online]. Available: www.natuecofarmingsscience.com.
- [10] A. M. Mishra, "AGRO - ECONOMIC RESEARCH CENTRE," no. 94, 2006.
- [11] R. Singh, N. K. Jat, N. Ravisankar, S. Kumar, T. Ram, and R. S. Yadav, "Present Status and Future Prospects of Organic Farming in India," vol. 3, pp. 134–136, 2018, doi: 10.1515/LIBR.1954.3.1-4.134.
- [12] भास्करनीलेश, "भारतीय कृषि जैविक खेती की ओर," *Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika*, no. 6, 2019.
- [13] R. Kumar *et al.*, "Organic farming status in India: A review," ~ 2964 ~ *Pharma Innov. J.*, vol. 11, no. 12, pp. 2964–2671, 2022, [Online]. Available: <https://adyanaturals.com/the-organic-philosophy.html>.
- [14] A. Malviya, J. Verma, and A. Dawar, "Adoption Level of Farmers Regarding Organic Farming Practices in Madhya Pradesh state of India," *Int. J. Curr. Microbiol. Appl. Sci.*, vol. 9, no. 7, pp. 3551–3555, 2020, doi: 10.20546/ijcmas.2020.907.415.
- [15] D. manand, D. K. Jaiswal, K. Bisht, P. bha, and Y. dav, "Attitude of Farmer towards Organic Farming in Jabalpur District of Madhya Pradesh, India," *Int. J. Curr. Microbiol. Appl. Sci.*, vol. 9, no. 5, pp. 2652–2657, 2020, doi: 10.20546/ijcmas.2020.905.304.
- [16] M. Sushmita and D. S. M. Basavaraju, "GROWTH AND PRESENT STATUS OF ORGANIC FARMING IN INDIA AND GLOBAL LEVEL," *www.worldwidejournals.com*, no. 2250, pp. 11–12, 2022.
- [17] S. Sharma, "ORGANIC FARMING AND VARIETIES OF ORGANIC FOOD: AN OVERVIEW OF," vol. 9, no. 3, pp. 1006–1010, 2021.